

ईरान के चाबहार पोर्ट का लाभ किसी भी सूरत में नहीं खोना चाहता भारत

पाकिस्तान को बायपास कर अफगानिस्तान व सेंट्रल एशिया के मार्केट को पकड़ने के लिए चाबहार की बड़ी अहमियत है

—जाल खंबाता—
—राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो—
नई दिल्ली, 3 मई। भारत के लिए रणनीतिक चाबहार बंदरगाह परियोजना एक सपना थी, क्योंकि इससे वह पाकिस्तान को बायपास कर अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक सीधे पहुँच सकता था। अब, अमेरिकी प्रतिबंधों की छूट समाप्त होने के बाद, ये उम्मीदें संकट में हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि भारत के पास अभी भी एक ट्रिक बची है।

उत्तर-पश्चिम में शत्रुदेश पाकिस्तान के होने का अर्थ है कि भारत को अफगानिस्तान और लाजपट मध्य एशियाई बाजार तक सीधा मार्ग न मिले। इस बाधा को पार करना जरूरी था। वर्ष 2003 में भारत ने ईरान के साथ चाबहार पोर्ट विकसित करने के लिए बातचीत शुरू की। एक दशक बाद, बंदरगाह के दो टर्मिनलों में से एक का संचालन करने के लिए साझेदारी

■ अमेरिका ने चाबहार बंदरगाह प्रोजेक्ट पर प्रतिबंध लगाकर छूट दी हुई थी। यह छूट गत सप्ताह समाप्त हो गई। इससे चाबहार प्रोजेक्ट के भविष्य पर संकट के बादल छा गए हैं।

■ भारत ने "टैक्नीकल प्रोग्रैमेटिज़्म" की नीति अपनाते हुए इस गतिरोध को दूर करने का रास्ता निकाला है। भारत अस्थाई रूप से चाबहार प्रोजेक्ट की अपनी हिस्सेदारी एक ईरानी ठी ईकाई को ट्रांसफर करेगा, प्रतिबंध काल के लिए। जब प्रतिबंध हट जाएंगे तो पोर्ट का नियंत्रण वापस भारत के पास आ जाएगा।

■ अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप से टकराव से बचते हुए जियो पोलिटिकल वास्तविकता के साथ संतुलन प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति की विशेषता मानी जाती है।

औपचारिक रूप से स्थापित की गई। लेकिन इस सप्ताह की शुरुआत में परियोजना पर लगाए गए प्रतिबंधों पर अमेरिकी छूट की अवधि समाप्त होने

के साथ ही, भारत फिर से शुरुआती स्थिति में पहुँच गया, लेकिन पूरी तरह नहीं। यहाँ पर दिल्ली ने मास्टरस्ट्रोक खेला।

सीमित विकल्पों के बीच, भारत अब अपनी हिस्सेदारी अस्थायी रूप से एक स्थानीय ईरानी इकाई को हस्तांतरित करने पर विचार कर रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, इस व्यवस्था में ईरानी इकाई प्रतिबंधों की अवधि के दौरान, संचालन का प्रबंधन करेगी। जब प्रतिबंध हटा दिए जाएंगे, नियंत्रण वापस भारत के पास जाएगा। विशेषज्ञ इसे "रणनीतिक व्यावहारिकता" (टैक्निकल प्रोग्रैमेटिज़्म) कह रहे हैं।

यह संकेत देता है कि दिल्ली लंबी अवधि के लिए तैयार है, जैसे क्रिकेट में टेस्ट मैच खेलते समय धैर्य बनाए रखा जाता है।

यही भारत की खेल योजना है। इस योजना के अनुसार, भारत चाबहार से पीछे भी नहीं हटेंगा, तथा ट्रंप के साथ टकराव से भी बच जायेगा। यह वही कला है, जिसे भारत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक सनकी अमेरिकी (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

होर्मुज़ पर ईरान नये कानून की तैयारी में

तेहरान, 03 मई। मध्य पूर्व में जारी तनाव के बीच ईरान अब होर्मुज़ जलडमरूमध्य को लेकर नया कानून लाने की तैयारी में है। ईरानी संसद के उपाध्यक्ष हमीदरेजा हाजी-बाबाई ने संकेत दिया है कि प्रस्तावित कानून के तहत इज़रायल से जुड़े जहाजों के इस अहम समुद्री मार्ग से गुजरने पर रोक लगाई जा सकती है।

उन्होंने कहा कि इस प्रस्ताव में दुश्मन देशों के जहाजों के लिए कड़े प्रावधान शामिल किए गए हैं। ऐसे जहाजों को जलडमरूमध्य से गुजरने के लिए युद्ध से जुड़े नुकसान की भरपाई

■ इज़रायल से जुड़े जहाजों के गुजरने पर रोक तथा दुश्मन देशों के जहाजों से युद्ध से नुकसान की भरपाई के संकेत।

करनी पड़ सकती है। इसके साथ ही अन्य देशों के जहाजों को भी ईरान से पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य किया जा सकता है।

हाजी-बाबाई के मुताबिक, युद्ध के बाद क्षेत्रीय हालात बदल चुके हैं और अब होर्मुज़ में जहाजों की आवाजाही पहले जैसी नहीं रहेगी। उनका कहना है कि यह कदम राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक हितों को ध्यान में रखकर उठाया जा रहा है।

अगर यह कानून लागू होता है तो (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

ईरान ने अमेरिका को 14 सूत्री शांति प्रस्ताव भेजा

ट्रंप ने कहा कि लगता नहीं ईरान से बात बन पाएगी, शांति प्रस्ताव की गहराई से समीक्षा करेंगे

■ ईरान के प्रस्ताव में आक्रमण नहीं करने की गारंटी, नाकाबंदी हटाने तथा लेबनान सहित, मोर्चा पर युद्ध समाप्त करने की माँग की गई है।

■ निक स्टीवर्ट ईरान के साथ युद्ध समाप्त करने के लिए काम कर रही टीम में शामिल हो गए हैं। वे तेजतर्रार और अनुभवी नीति विशेषज्ञ हैं। ट्रंप के पहले कार्यकाल में वे विदेश विभाग के सदस्य थे।

वाशिंगटन/दोहा/तेहरान, 03 मई। ईरान ने अमेरिका को नया शांति प्रस्ताव भेजा है। यह प्रस्ताव 14 सूत्रीय है। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने स्वीकार किया है कि यह प्रस्ताव मिल चुका है। उन्होंने शनिवार को पाम बीच इंटरनेशनल एयरपोर्ट के रनवे पर पत्रकारों को यह जानकारी दी। ट्रंप ने साफ किया कि उन्हें अभी भी नहीं लग रहा कि ईरान से बात बन पाएगी। उन्होंने कहा कि वे शांति प्रस्ताव की गहराई से समीक्षा करेंगे। इस बीच अमेरिका-इज़रायल के फरवरी के आखिर में किए गए सैन्य हमले के बाद होर्मुज़ जलडमरूमध्य में संकट लगातार गहरा रहा है। कतर के प्रधानमंत्री ने ईरान के विदेशमंत्री से सूझबूझ से काम लेने की सलाह दी है।

सीबीएस न्यूज, फॉक्स न्यूज, अल जजीरा और तसनीम की रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति ट्रंप ने पत्रकारों को बताया कि ईरान ने अभी-अभी प्रस्ताव भेजा है। बावजूद इसके उन्हें नहीं लगता कि ईरान समझौता कर पाएगा। इसमें आक्रमण न करने की गारंटी, नाकाबंदी हटाने और लेबनान सहित सभी मोर्चों पर युद्ध समाप्त करने की माँग की गई थी। उन्होंने कहा, "मैंने इसे अभी देखा नहीं है। मैं प्रस्ताव की समीक्षा करूँगा। इसके बाद ही हमारे रूख की मीडिया को

आधिकारिक जानकारी दी जाएगी।

ट्रंप ने पत्रकारों से बातचीत के कुछ समय बाद ट्विटर सोशल पर लिखा, "मुझे नहीं लगता कि ईरान का शांति प्रस्ताव स्वीकार्य होगा। ईरान ने पिछले 47 वर्षों में मानवता और दुनिया के साथ जो कुछ भी किया है, उसके लिए उसने अभी पूरी कीमत नहीं चुकाई है। उन्होंने कहा कि ईरान में सब कुछ तबाह हो चुका है। वह समझौता करने के लिए लालायित है।" उन्होंने दुहराया कि अगर अमेरिका ईरान से हट भी जाए तो भी तबाह हुए मुल्क को खड़ा होने में 20 साल लग जाएंगे।

ट्रंप ने कहा, मुश्किल यह है कि यही समझ में नहीं आ रहा कि इस समय ईरान का सर्वमान्य नेता कौन है। कभी कोई आगे आ जाता है तो कभी कोई। ऐसी स्थिति में इस बात की पक्की संभावना है कि अमेरिका फिर से कुछ ठिकानों पर सैन्य हमले शुरू कर सकता

है। अगर ईरान ने कोई बेजा हरकत की तो उसके लिए बहुत बुरा होगा। ट्रंप की हमले की टिप्पणी के बाद ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) ने कहा कि वह अमेरिका के साथ फिर से युद्ध के लिए तैयार है।

इस बीच वाइट हाउस ने शनिवार को पुष्टि की कि निक स्टीवर्ट ईरान के साथ युद्ध समाप्त करने के लिए काम कर रही राजनयिक टीम में शामिल हो गए हैं। वे राष्ट्रपति ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान विदेश विभाग के सदस्य रहे हैं। वे तेजतर्रार और अनुभवी नीति विशेषज्ञ हैं। वे विशेष दूत स्टीव विल्कॉफ की प्रतिभाशाली टीम के अहम सदस्य हैं।

इस समय तक चले हालात और कतर के प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन अब्दुल (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

भारत व चीन के कैलाश मानसरोवर यात्रा संचालन पर नेपाल ने आपत्ति जताई

बालेन सरकार ने दोनों देशों को पत्र लिख कर नेपाल की भूमि पर सड़क निर्माण, व्यापार व तीर्थयात्रा नहीं करने को कहा

काठमांडू, 03 मई। नेपाल की बालेन सरकार ने लिपुलेक पास से भारत और चीन के बीच कैलाश मानसरोवर यात्रा संचालन किए जाने पर आपत्ति जताते हुए दोनों देशों को कूटनीतिक पत्र भेजा है।

नेपाल के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लोक बहादुर पौडेल क्षेत्री ने जानकारी दी कि नेपाल सरकार ने लिपुलेक क्षेत्र से कैलाश मानसरोवर यात्रा संचालन करने की योजना पर औपचारिक आपत्ति दर्ज कराते हुए भारत और चीन, दोनों को पत्र भेजा है।

नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने फोन पर बताया कि इस विषय पर सभी राजनीतिक दलों से परामर्श करने के बाद

■ नेपाल सरकार ने कहा कि 1816 की सुगौली संधि के अनुसार, महाकाली नदी के पूर्व स्थित लिम्पियाधुरा, लिपुलेक और कालापानी नेपाल के अभिन्न भूभाग हैं और इस विषय पर नेपाल सरकार पूरी तरह स्पष्ट और अडिग है।

नेपाल की आधिकारिक स्थिति दोनों देशों को अवगत करा दी गई है। विदेश मंत्रालय द्वारा जारी प्रेस विज्ञापन में कहा गया है कि नेपाली भूमि लिपुलेक के माध्यम से प्रस्तावित कैलाश मानसरोवर यात्रा के संबंध में नेपाल सरकार ने अपना स्पष्ट रुख और चिंता भारत तथा चीन, दोनों पक्षों को कूटनीतिक माध्यम से पुनः जानकारी

करा दी है। सरकार ने यह भी दोहराया है कि 1816 की सुगौली संधि के अनुसार, महाकाली नदी के पूर्व स्थित लिम्पियाधुरा, लिपुलेक और कालापानी नेपाल के अभिन्न भूभाग हैं और इस विषय पर नेपाल सरकार पूरी तरह स्पष्ट और अडिग है। (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

भारत ने विश्व का पहला ऑप्टोसार सैटेलाइट लॉन्च किया

नई दिल्ली, 03 मई। प्रधानमंत्री मोदी ने रविवार को दुनिया के पहले ऑप्टोसार सैटेलाइट "मिशन दृष्टि" के सफल प्रक्षेपण की सराहना की है। बंगलूरू स्थित अंतरिक्ष स्टार्टअप गैलेक्सआई ने इस उपग्रह को बनाया है।

■ आधुनिक तकनीक का यह उपग्रह किसी भी मौसम/बादलों के बीच व रात के अंधेरे में धरती की स्पष्ट तस्वीरें लेने में सक्षम है।

गैलेक्सआई के मिशन दृष्टि उपग्रह को रविवार को कैलिफोर्निया से स्पेसएक्स के फाल्कन 9 रॉकेट के जरिए सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में भेजा गया। यह भारत में किसी निजी संस्थान की ओर से बनाया गया अब तक का सबसे बड़ा उपग्रह है। प्रधानमंत्री ने इस उपलब्धि को भारत के लिए गौरवशाली बताया है। (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा के झंडे वाले दो वाहनों को मतगणना परिसर में प्रवेश दिया गया- टीएमसी

निर्वाचन आयोग ने कहा, वाहन पास की सड़क से गुजर रहा था, जिसे जाँच के बाद जाने दिया गया

कोलकाता, 03 मई। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र के मतगणना केन्द्र के बाहर रविवार को हंगामा हुआ। तुणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि भाजपा के झंडे वाले दो वाहनों को उस परिसर में प्रवेश दिया गया, जहाँ इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) रखी गई है।

यह घटना उस समय हुई, जब इससे एक दिन पहले ममता बनर्जी ने सखावत बालिका विद्यालय में स्थित इस मतगणना केन्द्र के बाहर चार घंटे तक धरना दिया। उन्होंने स्ट्रांगरूम में अनधिकृत लोगों को प्रवेश का आरोप लगाया था। मतदान खत्म होने के बाद अब

■ एक दिन पहले ममता बनर्जी ने अपने निर्वाचन क्षेत्र के सखावत बालिका विद्यालय स्थित मतगणना केन्द्र पर चार घंटे धरना दिया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि स्ट्रांगरूम में अनधिकृत लोगों को प्रवेश दिया गया।

पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तुणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बीच सत्ता को लेकर तनाव बढ़ गया है। दोनों दलों के नेता और कार्यकर्ता राज्य भर में स्ट्रांगरूम की सुरक्षा पर नजर रखे हुए हैं, जहाँ उम्मीदवारों की किस्मत ईवीएम में बंद है। भारी जीत का भरोसा जताने के बावजूद, ममता बनर्जी ने कई बार मतगणना में गड़बड़ी और ईवीएम से छेड़छाड़ की आशंका जताई है। रविवार सुबह टीएमसी

कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि भाजपा के झंडे लगी दो गाड़ियाँ परिसर में घुसीं और स्ट्रांगरूम के पास तक पहुँच गईं। एक कार्यकर्ता ने कहा कि बिना पहचान पत्र के किसी को अंदर जाने की अनुमति नहीं है। फिर भी इन वाहनों को कैसे प्रवेश मिला। टीएमसी ने दावा किया कि पुलिस ने वाहनों को हटाने का भरोसा दिलाया। लेकिन वे कुछ समय तक वहाँ खड़े रहे। हालाँकि, निर्वाचन आयोग के एक (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

मणिपुर : बम हमले में मरे दो मासूमों का 25 दिन बाद अंतिम संस्कार

नई दिल्ली, 03 मई। मणिपुर के विष्णुपुर जिले में ट्रॉलाओबी घटना में जान गंवाने वाले दो मासूम बच्चों का अंतिम संस्कार 25 दिन बाद किया गया। इस घटना ने पूरे इलाके को गहरे शोक में डाल दिया है। जानकारी के अनुसार, 7 अप्रैल को मोइरांग के ट्रॉलाओबी अवांग लीकेई इलाके में स्थित एक घर

■ गत 7 अप्रैल को एक घर पर उग्रवादियों द्वारा फेंके बम से दो बच्चों की मौत हुई थी।

पर संदिग्ध उग्रवादियों द्वारा बम फेंका गया था। इस हमले में दो बच्चों की मौत पर ही मौत हुई थी, जबकि उनकी माँ गंभीर रूप से घायल हो गई थीं।

लंबे समय तक चले हालात और प्रक्रियाओं के बाद, अब जाकर दोनों बच्चों का अंतिम संस्कार किया गया। अंतिम संस्कार के दौरान इलाके में माहौल बेहद गमगीन रहा और लोगों ने पीड़ित परिवार के प्रति संवेदन व्यक्त (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

होर्मुज़ से एक और भारतीय जहाज निकला

नई दिल्ली, 03 मई। मिडिल ईस्ट में परेशानी चल रही है, लेकिन भारत के लिए राहत की खबर है। भारत के लिए गैस लेकर आ रहा जहाज सर्व शक्ति समुद्री रास्ते स्टेट ऑफ होर्मुज़ को पार कर गया है। ये जहाज मार्शल द्वीप के नाम से रजिस्टर्ड है। सरकार के अनुसार,

■ 46 हजार टन एलपीजी से भरा जहाज 13 मई को विशाखापट्टनम पहुँचेगा।

जहाज 13 मई को विशाखापट्टनम पहुँच जाएगा। मतलब, भारत को जरूरी गैस बिना किसी रुकावट के मिल जाएगी। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, इस जहाज में करीब 46 हजार मीट्रिक टन एलपीजी भरी हुई है। जहाज पर कुल 20 लोग काम कर रहे हैं, जिनमें से 18 भारतीय हैं। मिडिल ईस्ट के टेंशन और स्टेट ऑफ होर्मुज़ में रुकावट को लेकर सरकार ने यह (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

—डॉ. सतीश मिश्रा—
—राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो—
नई दिल्ली, 3 मई। अपने देश में तेजी से गिरती लोकप्रियता को रोकने के प्रयास में, अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने प्रमति करने वाले संकेत दिए हैं। एक ओर उन्होंने धमकी दी कि अमेरिका की नौसेना ईरान से वापसी के रास्ते में क्यूबा को निशाना बनाएगी, तो दूसरी ओर उन्होंने आपातकाल का हवाला देकर कांग्रेस की समीक्षा को दरगुजर देने की मंजूरी दे दी। ईरान को लेकर ट्रंप यह स्पष्ट नहीं कर पाए कि वे सैन्य कार्रवाई फिर से शुरू करेंगे या तेहरान के प्रस्तावों को स्वीकार करेंगे। हाल ही में, शाम पाम बीचेज के नॉन-प्रॉफिट फोरम वलब में अपने भाषण में उन्होंने कहा, "क्यूबा में कई समस्याएँ हैं।"

उन्होंने कहा, "ईरान से लौटते समय हमारा बड़ा विमानवाहक पोत, शायद यूएसएस अब्राहम लिंकन, जो

गत एक माह से अमेरिकी राष्ट्रपति क्यूबा पर बड़े रिफॉर्म करने या सैन्य कार्यवाही का सामना करने की धमकी दे रहे हैं

दुनिया में सबसे बड़ा है, हमारे पास आया, यह तट से लगभग 100 गज दूर रुकेगा और वे कहेंगे, "बहुत धन्यवाद हम हार मानते हैं।" ट्रंप प्रशासन वर्तमान में क्यूबा सरकार पर जोर डालने के लिए महीनों से अभियान चला रहा है कि वह बड़े पैमाने पर नाटकीय रिफॉर्म करे। इसके साथ ही, ट्रंप ने बार-बार धमकी दी है कि अपनी इच्छा पूरी करने के लिए, अमेरिका इस द्वीप पर सैन्य कार्रवाई कर सकता है। ट्रंप नेतृत्व वाले अमेरिकी प्रशासन ने मिडिल ईस्ट देशों को हथियारों की बिक्री को मंजूरी दी, कांग्रेस की समीक्षा को दरगुजर करते हुए उन्होंने इसके लिए आपातकाल का हवाला

■ दूसरी ओर राष्ट्रपति ट्रंप ने इज़रायल, कतर और कुवैत को 8.6 मिलियन डॉलर से अधिक हथियारों की बिक्री को मंजूरी दी।

दिया। यह सैन्य बिक्री, जो कुल 8.6

■ "आपातकालीन स्थिति" तथा "अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों" के नाम पर ट्रंप प्रशासन ने आवश्यक कांग्रेस स्वीकृति से बचकर तुरंत हथियार सप्लाई करने का निर्णय लिया।

बिलियन डॉलर से अधिक की है, हवाई रक्षा मिसाइलों से लेकर लेज़र गाइडेंस

सिस्टम तक फैली हुई है। अमेरिकी विदेश विभाग ने हाल ही में को इसकी घोषणा की, जबकि अमेरिका और इज़रायल का ईरान पर युद्ध नये सप्ताह में प्रवेश कर गया है, और संघर्ष समाप्त पर अभी तक कोई समझौता नहीं हुआ है, भले ही एक अस्थिर संघर्ष विराम लागू हो।

विदेश विभाग ने इज़रायल को 10,000 एडवॉन्स प्रिसिजन किल वेपन सिस्टम-ए ऑल अप राउंड्स और संबंधित उपकरणों की बिक्री की अनुमति दी, जिसकी कीमत 992.4 मिलियन डॉलर है, और इसे बीएई सिस्टम द्वारा निर्मित किया गया है। अमेरिका ने कतर को 10,000 एडवॉन्स प्रिसिजन किल वेपन

सिस्टम-ए ऑल-अप-राउंड्स (सिंगल वेरिएंट) सिस्टम की बिक्री को मंजूरी दी, जिसकी कीमत 992.4 मिलियन डॉलर है। इस संभावित बिक्री का मुख्य ठेकेदार बीएई सिस्टम्स होगा। कतर ने 200 पैट्रियट एडवॉन्स कैपेबिलिटी-2 (पीएसी-2) गाइडेंस एन्हांस्ड मिसाइल-टैकिंग कल इंटरसेप्टर और 300 पीएसी-3 मिसाइल सेगमेंट एन्हांस्मेंट इंटरसेप्टर और संबंधित उपकरण खरीदे, जिसकी कुल कीमत 4.01 बिलियन डॉलर है। लॉकहीड और आरटीएस इसके मुख्य ठेकेदार हैं।

यूएई को 1,500 गाइडेंस सैक्शन, सिंगल वेरिएंट (एयर-टू-एयर), एडवॉन्स प्रिसिजन किल वेपन सिस्टम-ए की बिक्री की अनुमति दी गई, जिसकी कुल लागत 147.6 मिलियन डॉलर है। रॉयटर्स ने बताया, कुवैत की 2.5 बिलियन डॉलर की खरीद के लिए (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)

अग्रिम जमानत मिलने के बाद खेड़ा दिल्ली पहुँचे

नई दिल्ली, 03 मई। उच्चतम न्यायालय से अग्रिम जमानत मिलने के बाद कांग्रेस नेता पवन खेड़ा रविवार को यहाँ पार्टी मुख्यालय इंदिरा भवन पहुँचे, जहाँ पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया। इससे पहले दिल्ली पहुँचने पर हवाई अड्डे पर भी पार्टी कार्यकर्ताओं ने खेड़ा का फूल-

■ हवाई अड्डे व मुख्यालय पर कार्यकर्ताओं व नेताओं ने उनका स्वागत किया।

मालाओं के साथ स्वागत किया। इसके बाद वे सीधे इंदिरा भवन पहुँचे। पत्रकारों से बातचीत में पवन खेड़ा ने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व लगातार सवाल उठा रहा है लेकिन आयोग की ओर से कोई जवाब नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि संविधान हमेशा संकट के समय में सहारा देता है। जब भी कोई व्यक्ति मुश्किल में होता है या (श्रेष्ठ अंतिम पृष्ठ पर)